072 071 067
GOVT. OF INDIA- RNI NO. UPBIL/2014/56766 ISSN - 2348 - 2397
UGC Approved Care Listed Journal
NIS

SHODH SARITA

JOURNAL OF ARTS, HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY BILINGUAL
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Ref. No. : SS/2020/NIS/41 Date : 17-12-2020

Certificate of Publication

[redacted]
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभागाध्यक्ष
शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली
जिला हिंगोली – 431513 महाराष्ट्र

TITLE OF RESEARCH PAPER

इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता में नारी

This is certified that your research paper has been published in **Shodh Sarita, Volume 7, Issue 28, October to December 2020**

SHODH SARITA
Editor in Chief

CHIEF EDITORIAL OFFICE
• 448/119/76, KALYANPURI THAKURGANJ, CHOWK, LUCKNOW -226003 U.P.
Cell.: 09415578129, 07905190645
E-mail : serfoundation123@gmail.com
Website : http://www.seresearchfoundation.in | http://www.seresearchfoundation.in

Assistant Professor
Shivaji College, Hingoli
Tq.& Dist.Hingoli (MS.)

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE
SHODH SARITA
SHODH SARITA
Vol. 7, Issue 28, October to December 2020
Page Nos. 242-245
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता में नारी

❑ डॉ. सुधीर [redacted]*

ABSTRACT

इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता अपने बहुआयामी स्वरुप के साथ प्रवाहमान रहीं है। अपने समय की सक्षम अभिव्यक्ति करने में तत्पर रहीं है। इक्कीसवीं सदी में स्त्री को भी समान संधी के अवसर प्रदान कर, उसे घर से बाहर लाकर बाजार में खडा किया। स्त्री मुक्ति, स्त्री स्वतंत्रता के नाम पर हम उसका वस्तुकरण कर रहे है। स्त्री घर के बाहर खूले जगत में आयी, तो उसकी अलग समस्याएँ निर्माण हो चुकी है। शिक्षा की क्रांति के कारण स्त्री को अधिकार प्राप्त हुए, अपना कर्तव्य तथा अपनी क्षमता का उसे अहसास हो रहा है। वह अपना अस्तित्व सिध्द करने लगी तब, स्त्री का संघर्ष घर और बाहर भुरू हुआ है।

***Keywords** – सामाजिक परिवेश, सामाजिक दृष्टिकोन,स्त्री का स्वावलंबन, पुरुष प्रधान संस्कृति का प्रतिरोध।*

इक्कीसवीं सदी की कविता का विचार करते है तो हमारा ध्यान बीसवीं सदीं के अंतिम दशक की कविता की ओर जाता है। अंतिम दशक की सूचना क्रांति, वैश्विकरण, बाजारवाद, प्रांतियवाद आदि आंदोलनों का इक्किसवीं सदी की कविता पर असर रहा हैं। इस सदी की कविता के बारे में सवाल उठता है कि क्या यह कविता अपने अपने समय की जटील यथार्थ को पूरे ताकत के साथ व्यक्त करने में सक्षम रहीं है? छवीनाथ मीश्र के अनुसार 'कविता न तो बंदुक है और न मशीनगन है, किंतु जब वह किसी के पक्ष मे खडी होती है तब वह ईश्वर से भी बडी होती है।' अतः कविता में समाज परिवर्तन की असाधारण शक्ति होती है, जो समाजिक आंदोलन के साथ बढते हुए और अधिक गहण बन जाती है। इक्किसवीं सदी की हिन्दी कविता अपने बहुआयामी स्वरुप के साथ प्रवाहमान रहीं है। अपने समय की सक्षम अभिव्यक्ति करने में तत्पर रहीं है।

उपर्युक्त विमर्श के आलोक में सर्वप्रथम कविता समाज की उपज है। सामाजिक घटना है। वह जीवन और जगत का पुनःसृजन करती है। उसमें जनमन और मानविय संवेदना तथा सामाजिक जीवन का सजीव चित्रांकण होता है। कविता की प्रेरणा, प्रयोजन एवं स्वरुप निर्धारण में समाज का बडा योगदान होता है। वह सामाजिक प्रेरणा से उद्भुत होती है। कविता सामाजिक परिवर्तन में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप करती है या नही यह विवाद का विषय हो सकता है, किन्तु समाज के हित साधन के लिएँ 'सूरसरी सम सब कहं हित होईश के विराट लक्ष्य के प्रति परिचालित होती है। दरअसल समाज का वास्तविक स्वरुप कविता में निश्चित आकार ग्रहण कर लेता है। वह समाज के निर्माण में, उसके विकास में, एवं उन्नयन में महती भूमिका अदा करता है। वस्तुतः साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। इससे स्पष्ट है कि साहित्य में समाज का चेहरा रचा गया है।

इक्कींसवीं सदी प्रगति की सदी है। चारों और नई–नई क्रांतियां जन्म ले रहीं है। चाहे वह क्षेत्र उद्योग का हो या शिक्षा का हो या फिर तकनिकी का हो इस क्रांति फलस्वरुप समाज प्रगति की ओर अग्रसर हुआ दिखाई देता है। भूमंडलीकरण, औद्योगिकरण, प्रोद्योगिकी, वैज्ञानिकता, उपभोक्तावाद, पर्यावरण प्रदुषण, आतंकवाद, साम्प्रदायिकता, पूँजीवाद तथा बाजारीकरण आदि के दौर में इक्कीसवीं सदी की हिंदी महिला रचनाकारों पर पुनर्विचार करना आवश्यक है। इससे महिला रचनाकारों के काव्यसृजन के विषय में जरूरी

*सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभागाध्यक्ष, शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली, जिला हिंगोली – 431513 महाराष्ट्र

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

नतीजे निकाले जा सकते हैं। पुरुष प्रधान संस्कृति का प्रतिरोध करती है निर्मला पुतल की कविता में अभिव्यक्त स्त्री जीवन के संपुर्ण व्याकरण को समेटते हुए परम्परागत दृष्टि का विरोध करते हुए कहती है–

" क्या तुम जानते हो

एक स्त्री के समस्त रिश्ते का व्याकरण?

बता सकते हो की तुम, एक स्त्री को स्त्री–दृष्टि से देखने

उसके स्त्रीत्व की परिभाषा?

अगर नहीं, तो फिर क्या जानते हो तुम

रसोई और बिस्तर के गणित से परे

एक स्त्री के बारें में।"

भारतीय समाज में आज की स्त्री अन्याय अत्याचार से मुक्त होना चाहती है। वह अपने अधिकारों को प्राप्त करना चाहती है। इक्कीसवीं सदी की प्रमुख कवियत्रींयों में सविता सिंह, रेखा मैत्र, आशा प्रभात, सुनिता जोशी, सुधा, निर्मला गर्ग, सुशिला टाकभौर, निर्मला पुतल, मधु गुप्ता, रमणिका गुप्ता, आदि लेखिकाएं है। इन गिनी–चुनी कवयित्रियों ने पिछले कुछ वर्षों की सशक्त हिन्दी कविता में जो कार्य संभव किया है उनमें कात्यायनी का नाम आग्रणी है। इन कवयित्रियों की प्रगतिशील दृष्टि के साथ सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तन की प्रकिया में आस्था रखती है। इसलिए यथास्थिती के प्रति एक विद्रोह इनकी कविताओं में प्रायः मिलता है। 'सात भाईयों के बीच' की सर्वप्रथम कविता से ही अपनी विद्रोही स्त्री द्वारा कात्यायनी स्थापित सत्ता को चुनौती देती है। कविता का शीर्षक है –'इस स्त्री से डरो' में कवयित्री कहती है कि जहॉ बन्धनों से जकडी हुई एक साधारण स्त्री के भीतर आजादी का एक अनन्त मानवीस स्पेस है। जैसे –

यही स्त्री

सब कुछ जानती है।

पिंजरे के बारे में

जाल के बारे में

यंत्रणा गृहों के बारे में।1

आज के समय में स्त्री व्यक्तित्व को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक दृष्टि से लोकतांत्रिक पुनःस्थापना की जरूरत है। सामाजिक व्यवस्था को देखे बिना नियम बताने से सत्तात्मक शक्तियों का निवारण नहीं हो पायेगा। मानवहित की महत्ता को समझती हुई, संजोती हुई आज की कवयित्री इस समाज के सभी स्तरों पर विद्यमान असमानताओं पर बोलती है। सामाजिक रूप में असुरक्षित स्त्री की सामाजिकता को लेकर हमारी व्याख्या में जो गलतियॉ है, कमियॉ है, उसको पुनर्परिभाषित करने का कार्य कात्यायनी ने निम्न पंक्तियों में किया है–

हम पढते हैं

अपने सामाजिक प्राणी होने के बारे में।

हम होते हैं

एक सामाजिक प्राणी ।

बचा रह जाता है

बस जानना

एक सामाजिक प्राणी होने के बारे में।2

बुनियादी तौर पर कात्यायनी की कविता से यह जाना जा सकता है कि वे संघर्षशील चेतना की कवयित्री हैं। उनकी कविता में स्त्री संघर्ष के स्वरों तथा स्त्री की मुक्ति की कामना को भी पहचाना जा सकता है। उनके मतानुसार आज की स्त्री विद्रोही, संघर्षशील, जागरूक, आत्मसम्मान से युक्त बुद्धिजीवीं है। कात्यायनी की कविता हमारे समाज के सामाजिक, राजनितिक, सांस्कतिक परिवेश में स्थित है और इस परिवेश में स्त्री की स्थिती पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित है। उनकी कविता में विशेष किस्म की ताजगी है, क्योंकि उन्होंने अपनी कविता में कथित वैश्विक समाज के विशिष्ट बिम्ब सृजित किए हैं। सामाजिक परिस्थितीयों के दमन का उद्घाटन उनकी कविता की शक्ति है। उन्होंने अपनी कविता में हमारे समाज की स्त्री की स्थिती पर बडे वस्तुगत और सटीक ढंग से फोकस किया है। न सिर्फ अपनी सामाजिक सकियता, वरन अपनी कविता द्वारा कात्यायनी मौजूदा मानव विरोधी माहौल का सशक्त प्रतिरोध करती हैं।

इक्कीसवीं सदी के दौर में जब स्त्री कविता अपनी मुखरता का परिचय देती है तो हमें स्त्री कविता की पृष्ठभूमि की तरफ ध्यान देना होगा। सामाजिक अन्याय के विरूद्ध, असांस्कृतिक कारवाईयों के विरूद्ध समय–समय पर स्त्री लेखिकाओं ने अपनी कविता के माध्यम से सार्थक भूमिकाऍ निभाई हैं। वह इतना जरूर पहचानती है कि हमारा स्वत्व, परिवार, अधिकार, राजनीति, परंपरा, संवेदना,

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

परिवर्तनों ने स्त्री समस्याओं को भी बदल दिया है। आत्मभिव्यक्ति का अवसर आज की स्त्रियों को प्राप्त होने के कारण उसके स्वरूप में भी बदलाव हुआ है। यद्यपि कभी–कभी अन्य आन्दोलन के समान स्त्री लेखन में उग्रवादी या विद्रोही चिन्तन के पुट छलक उठें। ममता कालिया की आधुनिक स्त्री कहती हैं –

"पैंतीस साल मैने सेवा की तुम्हारी
सुबह, 'ााम, आठों याम
तुम्हें गुड्डे की तरह संजोया
अपने मंगलसूत्र में मनके–सा पिरोया
थे तो तुम छह फुटे, तगडे और तेजस्वी
मैंने तुम्हें रखा ज्यों कपास का फोया।"

मधु गुप्ता कृत 'यथार्थ का धरातल' काव्य संग्रह में स्त्री संवेदना तथा सामाजिक सरोकारो की तीक्ष्णता उद्‌घाटित हुई है। उनकी नारी उडान कविता में संघर्षशिल भारतीय स्त्री की जीवंत छवि चित्रीत हुई है। आधुनिक युग में स्त्री ने प्रत्येक क्षेत्र में अपना वर्चस्व स्थापित किया है। चेतित हो उठी स्त्री प्रबल विरोधों के बावजुद अब रुकना नहीं चाहती । चांद पर परचम लहराने की कामना रखनेवाली उसकी उडान को वाणी देते हुए मधु गुप्ता लिखती है–

"चल पडी है नारी अब न रुकेगी
आज उठी है नारी, अब न झुकेगी
चॉद पर पहुंचकर परचम लहराया,
अपना वर्चस्व सबको बताया,
कौन कहता है नारी, पीछे है नर से?
वो आगे है। हर परचम से।"

इक्कीसवीं सदीं की हिन्दी कविता अपने युगीन विसंगतियों पर असहमती दर्शाते हुए वक्त की प्रवक्ता बनकर अपने युग को प्रबलता के साथ व्यक्त करती है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि, इक्कीसवीं सदी की स्त्री कविता का समाजशास्त्रीय विश्लेषण अपने आप में एक उत्तेजक अनुभव है। उन्होंने अपने समय की समाजव्यवस्था, सामाजिक विसंगति, राजनीतिक विद्रूपता, धार्मिक प्रवंचना तथा सांस्कृतिक छल को जिस ढंग से उद्‌घाटित किया है, वह अपने आप में एक विशिष्ट काव्यात्मक उपलब्धि है। आज की स्त्री कविता गैर–सामाजिक होकर नहीं, बल्कि अधिक से अधिक सामाजिक होकर अपनी उपस्थिती दर्ज कर रहीं है। जिन कवयित्रियों ने अपने को सामाजिक सरोकारों के विषयों से लम्बे समय तक अपने को दूर रखा, वे भी अन्ततः आज हिंदी कविता की सामूहिक–सामाजिक जिम्मेदारी में शामील हुई है, हो रहीं है। पुरूष वर्चस्ववादी तमाम उपहासों के बावजूद उनके काव्य में नयापन और तीखापन उजागर होता है।

संदर्भ –

1) कात्यायनी, सात भाईयों के बीच चंपा – वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली. प्र. सं.1994, पृ.सं. 13.

2) कात्यायनी, इस पौरूषपूर्ण समय में, परिकल्पना प्रकाशन, द्वितिय सं. 2008 पृ.सं. 96.

3) अनामिका, दूब–धान, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली प्र. सं. 2007, पृ.सं. 56.

❑❑❑

T.C.
Assistant Professor
Shivaji College,Hingoli.
Tq.& Dist.Hingoli.(MS.)

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli